बंगाल के सुप्रसिद्ध चित्रकार असित कुमार हाल्दार एवं क्षितीन्द्रनाथ मजूमदार के चित्रों का तुलनात्मक अध्ययन

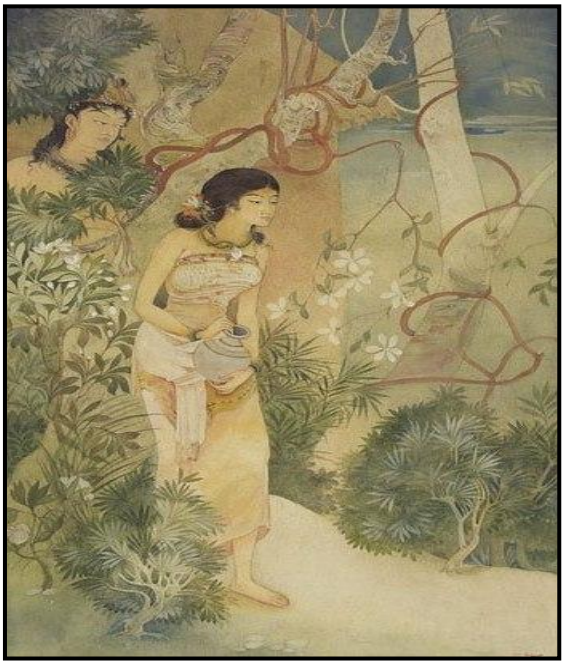

डॉ. भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय, आगरा

चित्रकला विषय में पी–एच.डी. उपाधि

हेतु

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध की संशोधित रूपरेखा

शोध निर्देशक

डॉ. ईश्वर चन्द गुप्ता

एसोसिएट प्रोफेसर

चित्रकला विभाग

धर्म समाज महाविद्यालय, अलीगढ़

2017-18

शोधार्थी

मुकेश कुमार पासवान

धर्म समाज महाविद्यालय

अलीगढ़

शोध केन्द्र :

धर्म समाज महाविद्यालय, अलीगढ़

बंगाल के सुप्रसिद्ध चित्रकार असित कुमार हाल्दार एवं क्षितीन्द्रनाथ मजूमदार के चित्रों का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ. भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय, आगरा

चित्रकला विषय में पी–एच.डी. उपाधि
हेतु
प्रस्तुत शोध प्रबन्ध की संशोधित रूपरेखा

शोधार्थी
मुकेश कुमार पासवान

शोध निर्देशक
डॉ. ईश्वर चन्द गुप्ता
एसोसिएट प्रोफेसर
चित्रकला विभाग
धर्म समाज महाविद्यालय, अलीगढ़

शोध केन्द्र : धर्म समाज महाविद्यालय, अलीगढ़

2017-18

प्रमाण–पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि मुकेश कुमार पासवान ने चित्रकला विषय में ''**बंगाल के सुप्रसिद्ध चित्रकार असित कुमार हाल्दार एवं क्षितीन्द्रनाथ मजूमदार के चित्रों का तुलनात्मक अध्ययन**'' शीर्षक पर अपनी शोध कार्य की संशोधित रूपरेखा को निश्चित समयावधि में पूर्ण करते हुए डा0 बी0आर0 अम्बेडकर विश्वविद्यालय, आगरा की पी–एच0डी0 (चित्रकला) उपाधि हेतु प्रस्तुत किया है। यह मेरा मौलिक शोध कार्य है।

दिनांक :
स्थान :

(मुकेश कुमार पासवान)
शोधार्थी

यह प्रमाणित किया जाता है कि उपरोक्त शोध कार्य की रूपरेखा शोधार्थी द्वारा किया गया मौलिक कार्य है जो मेरे निर्देशन में हुआ है।

शोध निर्देशक

दिनांक :
स्थान :

(डॉ0 ईश्वर चन्द गुप्ता)
एसोसिएट प्रोफेसर
चित्रकला विभाग
धर्म समाज महाविद्यालय, अलीगढ़।

(डॉ. हेमप्रकाश)
प्राचार्य
धर्म समाज महाविद्यालय, अलीगढ़।

अनुक्रमणिका

1.	प्रस्तावना	4–11
2.	समीक्षा	12–19
3.	शोध के उद्देश्य	20
4.	परिकल्पना	20
5.	कार्य प्रणाली	21–22
6.	प्रस्तावित कार्य का प्रभाव एवं महत्व	22
7.	विषयानुक्रमणिका	23–24
8.	संदर्भ / संदर्भ ग्रन्थ सूची	25–30

प्रस्तावना

भारत में बंगाल चित्रशैली की एक विशेष ही पहचान ही नहीं बल्कि उसका ऐतिहासिक महत्व है। इस शैली का उद्‌भव बंगाल कला परम्पराओं के साथ एक नयी कला चेतना से समुचित चेतना से हुई जिसमें अनेक कालाकारों ने भूमिका निभायी बंगाल शैली की विशेषता इस बात में थी किसी कला आंदोलन या अभियान की शक्ल या स्वरूप तैयार नहीं हुआ है।

कला प्रेमियों का सम्मिलित कला चेतना से अभिव्यक्ति और अभिषिक्त कला शैली थी मौटे तौर पर 19 वीं सदी से अवसान और 20 वीं सदी के आगमन की मूलक्रांति का मत क्रांति वेला में अनेक रचनात्मक विशेषकर साहित्य के साथ कला क्षेत्र में भारतीयों ने अपने अस्तित्व के बचाने में स्वयं होने लगे। तब अपने–अपने स्थानीय विशिष्टताओं के साथ कई कलाकार अनाम रह कर अपने कलाकृतियों में सृजन रत रहे थे वे सामाजिक थे, शिल्पी थे, और चित्रक्रम उनकी जीविका का साधन था । इसलिए पटना कलम के चित्र हो या कालीघाट के पट चित्र या पटुआ चित्र उन्हें बाजार चित्रशैली के नामों से जाना जाता था। उसी समय राजा रवि वर्मा 20वीं शताब्दी के प्रारम्भिक नाम था, जो बीतते वक्त के साथ और भी महत्वपूर्ण होता जा रहा है। विषय वस्तु नया पहल होने लगी इस बड़े रचनात्मक पहल को बंगाल के पुनर्जागरण काल की जड़ें जो ठाकुर परिवार के नामों से ऐतिहासिक एवं अविश्वसनीय परिणाम उन्हें जाना जाता है।[1]

भारतीय से सम्बन्ध करने का अनुरोध केवल देशी प्रेरणा से सम्भव नहीं हुआ था। **ई0वी0 हैवेल कला मर्मज्ञ** की अनुप्रेरणाऐं भी कार्य कर रही थीं, यही कारण है कि भारतीय साहित्य से सदियों से स्वीकृत आख्यान मूलक तेजी से हुआ बंगाल शैली के पूर्वाध्व प्रर्वतक के नाते इस प्रकार सर्वप्रथम सुकृित्व को दिलाने वाले ''सर्वप्रथम अवनीन्द्रनाथ ठाकुर'' हैं, जो रविन्द्रनाथ से 30 वर्ष छोटे थे। शिल्प गुरू अवनीन्द्रनाथ ठाकुर आधुनिक भारतीय चित्र कला के पुनर्जागरण के संस्थापक थे उन्होंने भारतीय

चित्रकला की नयी दिशा दी शिल्प गुरू अवनीन्द्रनाथ ठाकुर इस कला आन्दोलन अथवा विशेषधारा है जो टैगोर स्कूल के नाम से जाने जाते हें। असित कुमार हाल्दार, नन्दलाल बोस, क्षितीन्द्रनाथ मजूमदार, शैलेन्द्रनाथ डे का नाम विशेष रूप से उल्लेख्य है उनके ये चार शिष्य चार स्तम्भ के समान हैं, जिसमें **असित कुमार हाल्दार** एवं **क्षितीन्द्रनाथ मजूमदार** के व्यक्तित्व एवं कृतित्व मेरा शोध का विषय है जो हमारी कला शिक्षा से जोड़ने के लिए बाध्य करता है।[2]

उसी प्रकार भारतीय आधुनिक चित्रकला में ऐसे अध्याय जुडे जो अपने आप में सशक्त माध्यम थे। उन्हीं माध्यम को अपनाकर असित कुमार हाल्दार और क्षितीन्द्रनाथ मजूमदार जैसे कलाकारों का योगदान विश्व स्तर पर अतुलनीय रहा। अवनीन्द्रनाथ अपने शिष्यों में क्षितीन्द्रनाथ मजूमदार प्रमुख शिष्यों में थे साथ ही साथ असित कुमार हाल्दार का विशेष उल्लेखनीय है जिन्होंने भारतीय चित्रकला की नयी एवं अनुपम शैली को विकसित कर जो भारतीय कला की और लौकिक आशा विखरने में सफल हुए ।

असित कुमार हाल्दार

'असित कुमार हाल्दार जी' का जन्म 10 सितम्बर सन् 1890 ई0 में जोडासॉको टैगोर भवन बंगाल में हुआ और इनके पिता का नाम स्व0 श्री सुकुमार हाल्दार थे। मामा अवनीन्द्रनाथ की छत्र–छाया एवं परिवार का कला प्रेम आपकी कलात्मक अभिरूचि को जागृत करने में प्रर्याप्त था ।

प्रारम्भ में इनकी रूचि ग्रामीण पट–चित्रों की ओर अधिक थे । सन् 1906 ई0 में आपको गर्वनमेंट स्कूल ऑफ आर्टस कलाकत्ता में 15 वर्ष की आयु से ही असित कुमार हाल्दार ने अपने कला गुरू अवनीन्द्रनाथ टैगोर के निर्देशन में चित्रकला तथा कोलकात्ता प्रवासी लन्दन के वास्तु शिल्पी लिगोनार्ड जेनिंग्स से शिल्प कला का प्रशिक्षण लेने का अवसर प्राप्त हुआ आपको अपनी कला अभिरूचि को विकसित करने में दादा राखाल

दास लन्दन विश्वविद्यालय में संस्कृत के अध्यापक थे। असित कुमार हाल्दार जी के दादा जी से बहुत प्रोत्साहन मिला।

सन् 1910 ई0 में **'आँग्ल महिला लेडी हैरिंघम'** के आमंत्रण पर नंदलाल बसु के साथ हाल्दार भी अजन्ता की प्रतिकृतियॉ तैयार करने के लिये भेजे गये । कलकत्ता कला विद्यालय में अपनी शिक्षा समाप्त करने के पश्चात रवीन्द्रनाथ ठाकुर की इच्छा से सन 1911 ई0 में शान्ति निकेतन के कला भवन की स्थापना किया।

तब उसके बाद सन् 1914 ई0 में सरकार के पुरातत्व विभाग द्वारा समरेन्द्रनाथ गुप्त के साथ आपको मध्यप्रदेश स्थित रामगढ़ की पहाडी स्टेट में 'जोगीमारा गुफाओं' की प्रतिलिपियाँ चित्रित करने का अवसर प्रदान हुआ ।

पुनः सन् 1917 ई0 में ग्वालियर स्टेट ने **बाघ गुफाओं** की जांच परख के लिए असित कुमार हाल्दार जी को आमंत्रित किया और सन् 1921 ई0 में नंदलाल बसु और सुरेन्द्रनाथ कौर के साथ 'बाघ' के भित्ति–चित्रों की अनुकृतियाँ तैयार करने में भी उनका योगदान था।[3]

असित कुमार हाल्दार जी सन् 1923 ई0 में आप कला के विशेष अध्ययन हेतु इग्लैंण्ड, फ्राँस व इटली भी गये वहाँ से वापिस होने पर सन् 1924 ई0 में आपको महाराजा स्कूल ऑफ आर्ट्स एण्ड क्राफ्टस जयपुर मे प्रधान शिक्षक नियुक्त किया गया[4] तथा सन् 1925 ई0 में आपको गवर्नमेंट स्कूल ऑफ आर्ट्स एण्ड क्राफ्टस लखनऊ में प्राचार्य पद पर नियुक्त कर कला विद्यालय के विकास में भी पर्याप्त योगदान दिया जहाँ आप सन् 1945 ई0 तक आप प्राचार्य पद पर रहे।[5] सन् 1959 ई0 में राष्ट्रीय ललित कला अकादेमी नई दिल्ली के कलाकार निर्वाचित हुए असित कुमार हाल्दार की कला आपकी प्रारम्भिक रचानऐं भित्ति–चित्रों की शैली में अंकित है। पीछे से उन्होंने लकड़ी रेशम एवं हार्ड बोर्ड जैसे धरातल तथा जलरंग तेल रंग और टेम्परा पर अधिक कार्य करते थे उन्हेांने प्रयोग वादी शैली से लकड़ी पर लाख की वार्निश करके उस पर पेंटिंग बनाई, जिसे **'लोसंट या लासिट'** कहते हैं।[6]

असित कुमार हाल्दार जी का प्रसिद्ध चित्र 'जगई मगई' (सन्थाल परिवार) है जो इलाहाबाद संग्रहालय में संग्रहित है, अकबर, बसंत बहार, कच देवयानी, ऋतु संहार, कुनाल व अशोक, रासलीला जैसे चित्र उनकी तूलिका चित्रित हुये असित कुमार हाल्दार जी ने लगभग 40 ग्रन्थो की रचना की जिनमें **'इण्डियन कल्चर एट ए ग्लांस', 'आर्ट एण्ड ट्रेडीशन'**, **'रूपदर्शिका' 'ललित कला की धारा'** जैसी कला इतिहास सम्बन्धी पुस्तकें हैं। रवीन्द्रनाथ जी की मृत्यु पर बनाई गई आपकी कृति **'लास्ट जर्नी'** भी अत्यन्त दर्शनीय है। इनके प्रारम्भिक चित्रों में **सीता, नृत्यांगना** व **यशोदा माँ** उल्लेखनीय हैं असित जी की प्रतिभा प्रत्येक परिस्थिति में व्यंजित हुई। ऐसा लगता है जैसे उनके स्वप्न ही अदभुत रूप व अद्वितीय रंगों में उतरकर किसी गहन निन्द्रा में खो गये।

रवीन्द्रनाथ टैगोर ने लिखा था कि **तुम केवल चित्रकार ही नहीं 'कवि'** भी हो।

हाल्दार जी कुछ विशिष्ट कृतियां इस समय रवीन्द्रनाथ ठाकुर (शान्ति निकेतन), राजा प्रफुल्लनाथ ठाकुर (कलकत्ता), महानगर पालिका (इलाहाबाद), नेशनल गैलरी ऑफ मार्डन आर्ट (नई दिल्ली), राजा सुबोध चन्द्र मलिक वोस्टन म्यूजियम कलकत्ता, श्री चित्रालय त्रिवेन्द्रम, केरल, रीगा म्यूजियम यूरोप, नेशनल गैलरी मास्को, जगमोहन पैलेस चित्रशाला (मैसूर) इन सर्वजनिक संग्रहालयों में सुरक्षित हैं।[7] कलामय वातावरण में असित कुमार को असीम शान्ति मिलती रहे और यह शान्ति उत्कृष्ट कला रचना के लिए प्रेरक है। सन् 1964 ई0 में असित कुमार जी का लखनऊ में ही स्वर्गवास हो गया।[8]

क्षितीन्द्रनाथ मजूमदार

क्षितीन्द्रनाथ मजूमदार जी का जन्म 31 जुलाई सन् 1891 ई0 को पश्चिम बंगाल के मुर्शिदाबाद जिले के निमतिता नामक स्थान में हुआ था। वे केवल एक वर्ष के थे, तभी इनकी मॉ का स्वर्गवास हो गया इनके पिता का नाम श्री केदारनाथ मजूमदार है, वह जगताई में सबरजिस्ट्रार के पद पर थे और सुरूचिसम्पन्न धार्मिक व्यक्ति के थे। वैष्णव सम्प्रदाय से विशेष अनुराग होने के कारण आपको घर पर प्रत्येक रविवार को कीर्तन व

श्रीमद्भागवत का पाठ होता था । इस सभा के उपलक्ष्य में बीच बीच में पण्डितों का आगमन होता रहता था। इन विद्वानों के धार्मिक उपदेशों एवं प्रवचनों को सुनकर उनका मन राधा–कृष्ण एवं चैतन्य महाप्रभु की ओर आकृष्ट हुआ ।

शान्त सरल एवं शर्मिले स्वभाव के इस मातृविहिन बच्चे ने अपना एक अलग संसार बनाना प्रारम्भ किया। धार्मिक आख्यानों के ताने बाने में उनकी कल्पना को पंख लग गये थे। जो कलात्मक अभिव्यक्ति में साकार होने लगे । सर्वप्रथम उन्होंने गीली मिट्टी द्वारा रूप निर्माण प्रारम्भ किया कहते हैं कि अल्पावस्था में ही वे सरस्वती, दुर्गा, लक्ष्मी मातृदेवीयों की मूर्तियों को सफलता पूर्वक बनाने लगे थे । लेकिन उन्हें यह बिल्कुल पसन्द नहीं था कि उन्हें बाद में नदी या तालाब में विसर्जित कर दिया जाए मूर्ति विसर्जन के समय में बहुत दुःखी हो जाते थे और वे एकान्त में जाकर रोया करते थे। इसीलिए कला के इस माध्यम (मूर्तिकला) के प्रति उन्हें विरिक्त होती गयी और उसका स्थान चित्रकला को ले लिया।[9]

जगते जमीदार स्कूल से कक्षा 6 की शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात 'पाकुड़' हाईस्कूल में दाखिला ले लिया आपका घर से स्कूल 12 किलोमीटर लगभग था इसलिए क्षितीन्द्रनाथ मजूमदार स्कूल के हॉस्टल में रहते थे। वहाँ से परीक्षा पास कर सन् 1905 ई0 में क्षितीन्द्रनाथ ने कोलकाता के राजकीय कला विद्यालय में दाखिला ले लिया।[10] इस कला विद्यालय के प्राचार्य **पर्सी ब्राउन** थे। यहाँ पर इन्होंने आचार्य अवनीन्द्रनाथ टैगोर के निर्देशन में कला शिक्षा आरम्भ कर दी भारतीय चित्रकला के इतिहास में बंगाल स्कूल में अपना एक विशिष्ट स्थान रखते है। क्षितीन्द्रनाथ इस स्कूल के एक ऐसे कलाकार थे जिन्होंने अवनीन्द्रनाथ टैगोर के साथ मिलकर भारतीय कला को अपनी पहचान दिलायी।

वैष्णव भक्ति धारा के अन्तर्गत मध्यकालीन साहित्य और चित्रकला में अनेक रचानएँ मिलती है लेकिन जिस प्रकार क्षितीन्द्रनाथ मजूमदार ने उन्हें चित्रित किया है वह एक भक्त कलाकार की अपनी अन्तर्दृष्टि है जो सर्वथा नवीन है। सूफियाना ढंग का भक्ति भाव लिये हुये राधा–कृष्ण का ऐसा उदान्त चित्रण शायद ही कहीं दिखायी पड़े ।

चित्र दर्शन वैष्णव धर्म का प्रथम भक्ति भाव है और कीर्तन तदुपरान्त मजूमदार जी श्रीकृष्ण लीला कीर्तन के महान गायक भी थे। कोलकाता में चित्रकला सीखते वे अक्सर कॉलेज के बाहर खाली मैदान में नन्दलाल बोस असित कुमार हाल्दार, शैलेन्द्रनाथ डे तथा अन्य सहपाठियों को सस्वर भजन सुनाया करते थे। यह बात अवनीन्द्रनाथ ठाकुर तक पहुँची तो वे कालेज के मध्यावकाश में अक्सर उनका भक्ति गायन सुनते। कभी–कभी उन्हें अपने घर बुला लिया करते थे।[11]

क्षितीन्द्रनाथ मजूमदार जी ने बंगाल के वैष्णव संत चैतन्य महाप्रभु की भाव लीलाओं का सुन्दर चित्रण करके '**चैतन्य सिद्ध**' की उपाधि अवनीन्द्रनाथ जी से प्राप्त की थी। अवनी बाबू स्वयं कहते थे कि रेखा की कोमलता में तथा भागवत साहित्य के कवित्वपूर्ण सुन्दर वर्णन की गहराई पहचानने में और उसका सफलता के साथ अंकन करने में क्षितीन्द्रनाथ मुझसे श्रेष्ठ हैं।

बंगाल के गवर्नर **श्री शिशिर कुमार घोष** इन्हें बैष्णव चित्रकार कहा करते थे और श्री घोष ने क्षितीन्द्रनाथ मजूमदार के 25 से 26 चित्र भी खरीदे थे क्षितीन्द्रनाथ जी के एक चित्र **''श्री चैतन्य का गृह–त्याग''** पर मुग्ध होकर अबनीन्द्रनाथ ठाकुर ने उन्हें दो सौ रूपये से पुरस्कार स्वरूप भी दिये थे। अवनीन्द्रनाथ ठाकुर ने मजूमदार जी के अनेक चित्र खरीदे थे।[12]

इलाहाबाद विश्वविद्यालय के तत्कालीन कुलपति डॉ0 अमरनाथ झा इंग्लैण्ड गये हुये थे तो वहाँ उन्हें बंगाल के भूतपूर्व अंग्रेज **गवर्नर सर रोनाल्डशे** के संग्रह में क्षितीन्द्रनाथ मजूमदार के कुछ चित्र देखे वे उनसे प्रभावित हुए और भारत लौटने पर डॉ0 अमरनाथ झा ने श्री क्षितीन्द्रनाथ मजूमदार जी को आमंत्रित कर इलाहाबाद विश्वविद्यालय में चित्रकला की शिक्षा का सूत्रपात किया। 01 सितम्बर सन् 1942 ई0 को वे इस विभाग के प्रथम अध्यक्ष नियुक्त हुए और यही वह दिन था जब इलाहाबाद विश्वविद्यालय में चित्रकला विभाग की स्थापना हुई ।

क्षितीन्द्रनाथ मजूमदार पॉच छः वर्ष के पश्चात इण्डियन प्रेस इलाहाबाद के मालिक श्री हरिकेशव घोष ने मजूमदार जी से 'गीत गोविन्द' तथा चैतन्य के जीवन से सम्बन्धित चित्र बनाने का प्रस्ताव किया। इनमें से कुछ चित्र इण्डियन प्रेस द्वारा 'चित्रे–गीत–गोविन्द'' नामक चित्रावली के रूप में प्रकाशित भी हुए हैं।

क्षितीन्द्रनाथ मजूमदार के बनाये हुए चित्रों की प्रदर्शनियॉ इस प्रकार हें सन् 1949, 1963 तथ ई0 में आयोजित की गयी। बंगाल कांग्रेस कमेटी ने सन् 1963 ई0 में उन्हें अशोक स्तम्भ के पुरस्कार द्वारा से सम्मानित किया गया।[13]

मजूमदार के कृतियों की देश तथा विदेशों में भी सुरक्षा की गयी उनको देश तथा विदेश के संग्रहालयों में सुरक्षित रखा गया है, आपके सबसे अधिक चित्रों संकलन इलाहाबाद संग्रहालय है इन संग्रहालय में उनके आठ चित्र स्वामी हरिदास, मीराबाई राधा कीर्तन, आत्मा समर्पण, उनकी माँ मृत्यु शैया पर स्वामी हरिदास, और शकुन्तला आदि चित्र सुरक्षित हैं ।

बादलों में नृत्य करती हुई अप्सराऐं, कैकेयी और दशरथ, लक्ष्मी, रासलीला, फूल चुनती हुई महिला यक्ष की पत्नी आदि आपके सभी चित्र राष्ट्रीय आधुनिक कला संग्रहालय, नई दिल्ली में सुरक्षित है। इसके अतिरिक्त आपके चित्र इंडियन म्यूजियम, कलकत्ता, भारत भवन, वाराणसी, आशुतोष म्यूजियम ऑफ इण्डियन आर्ट, कलकत्ता में सुरक्षित हैं।[14]

क्षितीन्द्रनाथ मजूमदार ने ''वाश' तकनीक अन्य कलाकारों से निश्चिय ही भिन्न है। उनकी वाश रंगाकन पद्धति में वे जल रंग की टेम्परा पद्धति को शुद्ध रूप से प्रयुक्त करने वाले कदाचित वे पहले भारतीय चित्रकार थे। हल्का पीला, हरा, सफेद और गेरूआ उनके प्रिय रंग थे। उनके चित्रोंत्कर्ष को स्वीकार करते हुए उनके गुरू अवनीन्द्रनाथ ठाकुर ने कहा था 'क्षितीन्द्र हमारा शिष्य' है, लेकिन अपने रेखाओं और रंगों के संयोजन में इतना कोमल इतना सजग है कि हमसे भी आगे बढ़ गया है ।

उदाहरणार्थ – चित्रों में 'पालतू जानवर और नारी', 'चरण श्रृंगार, भक्ति और वैराग्य है।[15] सन् 1964 ई0 में क्षितीन्द्रनाथ मजूमदार इलाहाबाद यूनिवर्सिटी से रिटायर्ड होने के पश्चात मुक्त रूप से कला साधना करते रहे। क्षितीन्द्रनाथ जी 9 फरवरी सन् 1975 ई0 को इलाहाबाद में ही आप स्वर्ग को सिधार गए।[16]

दोनों कलाकारों की चित्रकृतियाँ धर्म सामाजिक सरोकारें से ओत–प्रोत हैं जहाँ क्षितिन्द्रनाथ मजूमदार के चित्र वैष्णवधर्म से ओत–प्रोत है वहीं असित कुमार के चित्रों में बौद्धधर्म सौन्दर्यता के साथ सामाजिक चिन्तन विषयों के साथ अपने चित्रों में सौन्दर्य विखेरा। दोनों ही कलाकार उ0प्र0 की कला में विशेष उल्लेखनीय योगदान दिया जहाँ असित कुमार उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ कला विद्यालय में कला के प्रचार–प्रसार से जुड़े रहे, वहीं मजूमदार धर्म की नगरी प्रयाग में अपनी कला यात्रा को आगे बढ़ाया जो कलाकारों का योगदान अविस्मर्णीय है।

असित कुमार हाल्दार एवं क्षितीन्द्रनाथ मजूमदार एक ऐसे कालाकार हुए जिन्होंने आधुनिक भारतीय चित्रकला को अन्तराष्ट्रीय स्तर पर पहुँचाया। दोनों ने बंगाल स्कूल से निकलकर उत्तर प्रदेश की कला को एक नई पहचान बनायी। साथ ही साथ उत्तर प्रदेश की कलात्मक वातावरण देने में अग्रणी रहे। अतः इनके कार्य एवं तकनीक की समानता और असमानता के लिए अध्ययन के लिए इस विषय पर शोध करने के लिए पूर्णतः शोध निर्देश कुशल मार्ग दर्शन एवं निर्देशन में इसकी रूप रेखा प्रस्तुत की है, जो इस प्रकार है।

समीक्षा

सम्बन्धित शीर्षक का सर्वेक्षण राष्ट्रीय एवं अर्न्तराष्ट्रीय

शाह, रणजीत (2002), ''बंगाल शैली'' समकालीन कला बंगाल शैली की चित्रकला में लेखक रणजीत शाह ने भारत में स्थापित बंगाल चित्रशैली पर अपने पुस्तक में प्रकाश डाला है मोटे तौर पर 19वीं शताब्दी से 20वीं शताब्दी के कला के प्रगति की व्याख्या की है जिनमें पुनर्जागरण स्वदेशी आदि से सम्बन्धित प्रकाश डाला है एवं बंगाल शैली की पूर्वाध्य अवनीन्द्रनाथ ठाकुर ने विशेष प्रकाश डाला है, इसके विभिन्न चरणों से जुड़े हुये कृति आदि परिवेश आदि का विस्तार से चर्चा किये हुए हैं, अवनीन्द्रनाथ ठाकुर के साथ असित कुमार हाल्दार एवं क्षितीन्द्रनाथ मजूमदार, शैलेन्द्रनाथ डे, नन्दलाल बोस, समरेन्द्रनाथ गुप्त, विनोद बिहारी मुखर्जी आदि जैसे महत्वपूर्ण कलाकारों के कलायात्रा का मूल्यांकन किया है, साथ ही साथ बंगाल शैली मुख्य धारा के जुड़ कर बंगाल स्कूल के चित्रकला के महत्व पर प्रकाश डाला है, पुस्तक में भारतीय कला के प्रकाशन लगभग सभी स्रोतों का अंकन किया है, जो बंगाल शैली के चित्रकला की एक महत्वपूर्ण पुस्तक हैं।

अग्रवाल, श्याम बिहारी, ''सन्त चित्रकार क्षितीन्द्रनाथ मजूमदार'' समकालीन कला बंगाल शैली की चित्रकला में लेखक श्याम बिहारी अग्रवाल ने कहा है आधुनिक भारतीय चित्रकला के जनक शिल्प गुरू अवीन्द्रनाथ ठाकुर भारतीय पुनर्जागरण (रेनेसाँ) कला के संस्थापक थे, जिन्होंने भारतीय कला का गहन अध्ययन एवं विश्लेषण कर विशिष्ट कलात्मक बोध के द्वारा इसे एक नई दिशा दी, अवनी बाबू के दो शिष्यों जिनमें से एक को वे 'बौद्ध धर्म' सिद्ध तथा दूसरे को 'चैतन' सिद्ध कहते थे, क्षितीन्द्रनाथ मजूमदार एक महान आत्मा थे और चित्रकार से पहले परम वैष्णव भक्त थे। कलाकार के जीवन में भक्ति के प्राधान्य का कारण उनके घर का धार्मिक वातावरण था, उनके घर में सदैव भजन कीर्तन एवं साधु–संतों का प्रवचन होता रहता था। बंगाल का मुर्शिदाबाद जिला जहाँ उनका जन्म हुआ था। भजन कीर्तन का प्रमुख केन्द्र रहा है, इसी वातावरण ने उन्हें श्रीकृष्ण और राधारानी का भक्त बनाया। उनके जीवन की दूसरा पहलू है उनका अपूर्ण त्याग और अद्‌भूत धैर्य; जिसके द्वारा उन्होंने अपने जीवन में आये अनेक संकटों का

सहजता से सामना किया। जीवन में उन्होंने जितने उतार–चढ़ाव देखे, जितने कष्टों का सामना किया और कला जगत में जितनी उपेक्षा सही, वह केवल भक्त कलाकार द्वारा ही सम्भव था कि सब कुछ सहते हुए निरन्तर अपनी कला साधना में लगा रहे।

मार्डन एण्ड कन्टेम्परेरी साउथ एशियन आर्ट, न्यूयॉर्क (18 सितम्बर, 2013) क्षितीन्द्रनाथ मजूमदार का शुरूआती जीवन में बंगाल स्कूल का महत्वपूर्ण योगदान है। वह अवनीन्द्र नाथ के संरक्षण में कार्य किया। उनके साथ नन्दलाल बोस और असित कुमार हाल्दार ने भी कार्य किया। क्षितीन्द्रनाथ मजूमदार 1909 ई0 में अवनीन्द्रनाथ के छात्र बने, जब उत्तरार्द्ध में भारतीय समाज को पाश्चात्य कला के लिए स्थापित किया और उस समय मजूमदार ने स्वदेशी आधुनिक कला बीज वोया। क्षितीन्द्रनाथ जमीन से जुड़े आन्दोलन का हिस्सा थे और रंग धौन को तकनीक को पूरा करने के लिए खुद को उसमें पूरी तरह से डुबो दिया।

शास्त्रतीय संस्कृत साहित्य और बंगाल की समृद्ध वैष्णव परम्पराए उनके काम के लिए प्ररेणा का स्रोत थी वास्तव में क्षितीन्द्रनाथ की कला को उनकी भक्ति का एक अभिव्यक्ति माना जा सकता है।

साउथ एशियन आर्ट, मुम्बई (19 दिसम्बर, 2013) असित कुमार हाल्दार की कला प्रकृति के समीपस्थ थे जो कि बंगाल के प्रमुख कलाकारों में से एक है उन्होंने अजन्ता, बाघ, और सिगीरिया, गुफाओं की हतेलिया तैयार की हमें इन पेन्टिंग्स के उस नोट को पुनः प्रयास करना चाहिए। यह एक मुश्किल काम ही कला अन्तज्ञान है। जितना अधिक हम इसका विश्लेषण करने का प्रयास करते हैं, उतना ही हम उससे दूर भटकते हैं।

अवनीन्द्रनाथ टैगोर के जल्द से जल्द विद्यार्थियों के साथ एक प्रतिभाशाली कलाकार असित कुमार हाल्दार, तेल, टैम्परा और पानी के रंगों को आसानी से काम किया और यह भी अद्वितीय तकनीक में एक लकड़ी पर लाख किए चित्रकला के विकसित एक चित्रकार और मूर्तिकार के अलावा, हल्दार एक प्रतिभाशाली लेखक भी था और अपने अद्वितीय कार्य के लिए जाने जाते है।

सेमिनार ऑन दि वर्क्स एण्ड लाइफ ऑफ क्षितीन्द्रनाथ मजूमदार सेट–6, इलाहाबाद (2014) मेमोरियल प्रोग्राम में क्षितीन्द्रनाथ मजूमदार के जीवन पर विशेष चर्चा हुई उनके जीवन के बारे में विभिन्न कला मर्मज्ञों ने अपने–अपने विचार प्रस्तुत किए उन्होंने बताया कि क्षितीन्द्रनाथ मजूमदार का बंगाल स्कूल से एक विशेष लगाव है।

यह प्रोग्राम था जो इन्हें इलाहाबाद म्यूजियन और क्षितीन्द्रनाथ मजूमदार के क्रियाशील संस्थागत, राजेश पुरोहित, अध्यक्ष के म्यूजियम जिन्होंने अपना योगदान दिया वे कलाकार, वक्ता, शिल्पी आदि थे। श्री श्याम बिहारी अग्रवाल इलाहाबाद विश्वविद्यालय के दृश्यकला विभाग के पूर्व प्रमुख है जो क्षितीन्द्रनाथ से प्रभावित है।

इस अवसर पर अन्य लोगों ने भी अनुपम आनन्द और डॉ0 राजेश कुमार मिश्रा ने भी कार्यक्रम का आयोजन किया। फाउण्डेशन के प्रमुख ने कार्यक्रम की मेजवानी के लिए इलाहाबाद संग्रहालय का धन्यवाद किया।

क्षितीन्द्रनाथ मजूमदार, म्यूटुअल आर्ट (इण्डियन 1891–1975) (जनवरी, 2010) क्षितीन्द्रनाथ मजूमदार का जन्म 1891 में हुआ, वह भारतीय दृश्य कलाकार थे। क्षितीन्द्रनाथ मजूमदार के द्वारा कई गैलरी और संग्रहालय में प्रदर्शित किया। जिसके आधुनिक कला दीर्घा, दिल्ली में कलाकारों द्वारा कई काम क्रिस्ट्री, लंदन, द्वारा नीलाम किये गये जिसमें चैतन्य बेचा गया।

दि आर्ट ऑफ बंगाल एल डी0ए0जी0 मॉडर्न, न्यूयॉर्क (जनवरी, 2017) डी0ए0जी0 आधुनिक न्यूयार्क में सर्वेक्षण प्रस्तुत किया जिसमें क्षितीन्द्रनाथ के कार्यों को प्रदर्शित किया गया तथा बेचा गया, कलाकार क्षितीन्द्रनाथ मजूमदार एक भारतीय आधुनिक कलाकार थे जिनमें विशेष प्रतिभा से सम्पन्न थे।

आर्ट मार्केट इज बैक (जनवरी 2011) कलाकारों के कार्यो को प्रदर्शित करने के लिए कला दीर्घाओं की आवश्यकता होती है। जिसमें दीर्घाओं में लगे कार्य को दर्शक बड़े ही आसानी से देख सकते हैं तथा उसका अवलोकन किया जा सकता है। जिससे छात्र

व दर्शक लाभान्वित होते हैं। बड़े कला, बाजार, बड़े पैमाने पर इन्हें खरीदा व बेचा जाता है। कला बाजार निश्चित स्तर पर वापस आ गया है।

कला जगत में लखनऊ आर्ट कॉलेज की भूमि (5 अक्टूबर, 2015) हाल्दार का जन्म जोदासाकू सन 1890 ई0 में हुआ, हाल्दार मूर्तिकला की पढ़ाई की 1905 ई0 में दो बंगाली कलाकार जादूपाल व वक्सरपाल से प्राप्त की। रवीन्द्रनाथ के समय में बगाल स्कूल में जल रंग पद्धति का विकास हुआ वह पहले नन्दलाल बोस, क्षितीन्द्रनाथ, गांगुली, हाल्दार आदि कलाकार बंगाल स्कूल के रत्न थे। हाल्दार जब लखनऊ आर्ट कॉलेज में आये तो उन्होंने अपने नये–नये कार्यों से कलाकारों को नये–नये गुण सिखायें जिससे उनके द्वारा बड़े ही जिज्ञासू थे। अनुराग चाहिये, धैर्य चाहिए, साधना की सफलता भी कला चर्चा एक साधना ही है।

दृश्यकला (9 सितम्बर, 2011) भारतीय कला में पुनरूत्थान काल के महान चित्रकारों के असित कुमार हाल्दार का विशेष स्थान है। हाल्दार जी का जन्म सन 1890 ई0 को कला भूमि कोलकाता में हुआ था, वे अवनीन्द्रनाथ बाबू के प्रिय शिष्य थे। उनको मार्ग दर्शन में कलकत्ता आर्ट कॉलेज से कला शिक्षा प्राप्त की। चित्रकार के साथ–साथ वह कवि–गीतकार भी थे कवि गुरू रवीन्द्रनाथ के संयोगी, असित कुमार, गीतपूर्ण सुकुमार व लयबद्ध थी, वे लकड़ी, रेशम, हार्डबोर्ड, जैसे– धरातल तथा जलरंग और टेम्परा पर अधिक कार्य करते थे, उन्होंने प्रयोगवादी शैली से लकड़ी पर वार्निश करके उस पर पेटिंग बनाई, जिसे **लोसंट** या **लोसिट** करते हैं। अजन्ता जोगीमारा, बाघ के भित्ति चित्रों की अनुकृतियां तैयार करने में भी उनका योगदान था। वह पहले चित्रकार थे जिन्हें रायल सोसाइटी ऑफ आर्ट के फेलोशिप से सम्मानित किया गया, आध्यात्मिक भावको हाल्दार ने अपने रचना कौशल से चित्रों में उकेर कर चित्रकला को नव्य कर दिया। 14 फरवरी 1964 तक के कला सृजन में लीन रहे।

असित कुमार हाल्दार के जीवन के विभिन्न आयाम (27 मई, 2017) असित कुमार हाल्दार, बंगाल स्कूल के एक भारतीय चित्रकार थे और शांति निकेतन में रवीन्द्रनाथ टैगोर सहायक थे। वह बंगाल के प्रमुख कलाकारों में से एक थे।

सन् 1909 से 1911ई0 में वह अजन्ता के भित्ति चित्र पर पेंटिंग का दस्तावेजीकरण कर रहा है। उन्होंने **महिला हेरिंघम** के साथ मिलकर एक अभियान पर दी अन्य बंगाली कलाकारों के साथ संयोजन कार्य किया।

सन 1911 से 1915 ई0 तक शांति निकेतन में शिक्षक रहे तथा वह 1911 से 1923 ई0 तक प्राचार्य के पद पर रहने के साथ–साथ कला विधार्थियों के लिए नये–नये प्रयोग सिखाये व उन्हें अपने–अपने क्षेत्र में पारंगत किया जिससे वहां के छात्र अपने में एक परिपक्क कलाकार हो चुके हैं।

सन 1923 ई0 में हाल्दार ने यूरोप का दौरा किया और जल्द ही यह महसूस किया कि यूरोपीय कला में यर्थाथवादी है तथा उन्होंने वहॉ शारीरिक विशेषताओं के संतुलित करने की मांग की जो विशेषक, सम्बन्धित थी, हाल्दार पूरे जीवन में अमूर्त कवि थे। उन्होंने **कालिदास के मेघदूत** और **शिल्पमाला** को **संस्कृत** से **बंगाली** में अनुवादित किया।

उन्होंने दृश्य कला के कई कविताओं को चित्रित किया। बुद्ध पर उनकी कला और भारत का इतिहास इस काव्य छतरी के चित्रित किया।

अजन्ता का एक नया एनोट्टेड संस्करण हाल ही में लालकवि को कोलकाता द्वारा प्रकाशित किया गया था।

क्षितीन्द्रनाथ मजूमदार गंभीरा में श्री चैतन्य, मुम्बई (21 मार्च, 2009) क्षितीन्द्रनाथ की कलाकृति **श्री चैतन्य महाप्रभू** की गंभीर शान्त मुद्रा में बैठे हुए है। इसे 21 मार्च 2009 को मुम्बई में दिखाया गया जिसे देखने के लिए बहुत से कलाकारों व कला मर्मज्ञ कला में उन्होंने अपने–अपने विचारों से चित्रकला को प्रस्तुत किया। मजूमदार को इस कला कृति के शांतिभाव से प्रभावित होकर कला के अपने–अपने विचार प्रस्तुत किये।

क्षितीन्द्रनाथ ने **बोर्ड पर सादा पेपर पर जल रंग (वाश)** तकनीक प्रयोग करके चित्रों को पूर्ण किया है।

मजूमदार क्षितीन्द्रनाथ – श्री चैतन्य महाप्रभु संन्यास के बाद माता से मिले (18 सितम्बर, 2013 न्यूयार्क) इस चित्र में क्षितीन्द्रनाथ ने चैतन्य महाप्रभु को उनकी मॉ से मिलने का मार्मिक विषय दर्शाया है जिसमें करूणा के भाव व प्रेम से लिप्त है जो कि एक प्रतिभाशाली चित्र प्रस्तुत होता है। चित्र में मजूमदार है जलरंग तकनीक (वांश) का प्रयोग किया है तथा चित्र में भाव बड़े मार्मिक है। रंग संयोजन बड़ा ही साधारण है, जो विषय से पूर्ण मेल खाता है।

क्षितीन्द्रनाथ मजूमदार का चित्र – कृष्णा और राधा एक व्याख्या (6–12 दिसम्बर, 2001) क्षितीन्द्रनाथ मजूमदार की पढ़ाई पश्चिम बंगाल में हुयी तथा वहीं जन्म सन 1891 ई0 में हुआ। वह वहीं से बाद में गर्वमेंन्ट स्कूल ऑफ आर्ट कोलकाता में दाखिल हो गये। उसके बाद वहां प्रधानाचार्य थे तथा **'इण्डियन सोसाइटी ऑफ ओरियन्टल आर्ट कोलकाता'** की स्थापना की तथा 1942–64 के बीच इलाहाबाद विश्वविद्यालय में भी रहे।

वह श्री चैतन्य, वैष्णव के साथ–साथ अवनीन्द्रनाथ से प्रभावित थे उन्होंने एक कला प्रदर्शनी अपने कार्यो की 1928 में संयोजित की। जो कि एथेन गैलरी जैनेवा, स्विटजरलैण्ड में एक प्रदर्शनी यूनाइटेड स्टेट ऑफ अमेरिका द्वारा 1924 में आयोजित की गई। जिसे फोडरेशन ऑफ आर्ट द्वारा आयोजित किया गया था। वहीं–22 प्रदर्शियाँ उनकी विभिन्न प्रदेशों में हुई जिनमें पेरिस, फ्रांस, इग्लैण्ड, बेल्जियम, नीदर लैण्ड आदि में की गई।

उनके अतुलनीय कार्य के लिए उन्हें डॉक्टरेट उपाधि से नवाजा गया। रवीन्द्र भारतीय कला विश्वविद्यालय कोलकाता द्वारा और मेरिट पुरस्कार बंगाल कांग्रेस कमेटी द्वारा 1963 ने दिया एक प्रतिभाशाली कला मर्मज्ञ व एक कुशल शिक्षक थे।

गौतम चटर्जी (2010) **''असित रवीन्द हाल्दार के कला अनुशीलन''** असित कुमार हाल्दार ने जिस बंगाल शैली को लखनऊ लेकर आये थे वह रवीन्द्र कला ही थी थोड़ा अवनीन्द्र स्पर्श होती हुई संक्षेप में यह दोहरा ले उनके पिता सुकुमार हाल्दार और पितामह शखालदास हाल्दार दोनों कलाकार थे लखनऊ के आज आर्ट्स कॉलेज ने अपने शुरूआती दिनों में उनके साथ जो तीन साल गुजारे थे यानी सन् 1923–1925 वह इस विमर्श के तीन महत्वपूर्ण प्रसंगों में से एक है।

अपने जीवन को कला के अनुशीलन में रूपान्तरित करने में सफल हुए असित कुमार हाल्दार का आकलन करना हो तो उनकी तीन भूमिकाओं की चर्चा यहाँ आवश्यक है। आकंलन उसके कृतित्व से किया जाना चाहिए जिसमें उसका असल व्यक्तित्व निहित रहता है। यहाँ हम व्यक्तित्व की जीवनशैली के लिए एक आधार शब्द ले रहे, अनुशीलन, जिसके आधार पर हम हाल्दार के कृतित्व पर विमर्श करने में सक्षम हो सकेंगे। उनके तीन कृतित्व, उनकी तीन भूमिकाएं है। जिससे हमारा कला समाज समृद्ध हुआ है, जो उनके प्रति आज भी कृतज्ञ है।

ये तीन भूमिकाएँ है, उनका लखनऊ के तत्कालीन आर्ट्स क्राफ्ट कॉलेज में आना, मध्य भारत की गुफाओं में प्राचीन समय की उत्कीर्ण कला से बृहत्तर समाज को परिचित करना और स्वयं की कला रचना आज हम उनकी सिर्फ इन्हीं तीन भूमिकाओं पर विमर्श कर रहे हैं। इस बात को मुखर स्वर से रेखांकित और प्रतिष्ठित करते हुए कि यदि वे ऐसा कर सके तो उन सबके पीछे उनकी जीवनशैली का एक ही पक्ष तो आधार या छाया या कसौटी की तरह उसके जीवन में उनका साथ निभाता रहा वह भासेगा और वह जीवन भर का उनका अनुशीलन/रचने या कुछ भी करने से पहले हम किस तरह का जीवन जीते हैं, कैसे जीते हैं, वह कितनी सादगी और जीवन मूल्यों से भरा है यही संक्षेप में अनुशीलन शब्द की परिभाषा हैं।

अवधेश मिश्र (2010) **''भारतीय समकालीन कला और लखनऊ के कलाकार''** शीर्षक में लखनऊ की चर्चा करते ही 'नजाकत और नफासत' की तरह संस्कृत जेहन में

आती है जिसकी छाप यहाँ की रोजमर्रा की जिन्दगी में हम आज भी देख सकते हैं और इस सम्पूर्ण संस्कृति की आत्मा है ''संवेदनशीलता की पराकाष्ठा''। लोगों में विचार–व्यवहार, पहनावे, साज–सज्जा की वस्तुएँ, त्यौहारों, जलसों, मनोरंजन, अतिथि–कलाकार कहाँ नहीं दिखता यह संवेदन? नृत्य, कविता/शायरी, संगीत, चित्रण, मूर्ति रचना, शिल्पकारी और अन्य समस्त कलाओं की आत्मा यही तो है। रंगों के प्रति संवेदन तो और भी बेजोड़ रहा है।

सन् 1911 में गोमती तट पर स्थित कला एवं शिल्प महाविद्यालय, लखनऊ (स्कूल ऑफ डिजाइन का विकसित रूप जो प्रारम्भ में चौक लखनऊ में था) की स्थापना हुई थी। लखनऊ में प्रशिक्षित हुए कलाकारों ने प्रदेश में एक कला वातावरण बनाया और राष्ट्रीय/अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर कला शिक्षक, कला समीक्षक, कला इतिहासकार, कला संग्राहक और प्रशासन के रूप में स्वयं को लगातार स्थापित किया है।

बड़े कला केन्द्र लखनऊ की बात करें तो असित कुमार हाल्दार द्वारा 1925 में कला एवं शिल्प महाविद्यालय, लखनऊ के प्रधानाचार्य का पदभार ग्रहण करने के उपरान्त लखनऊ में एक नया कला वातावरण बनने लगा। असित ने वाश–पद्धति के चित्रण पर जोर दिया और सदैव यह चाहा कि लखनऊ की कला की अपनी एक पहचान बने। इसीलिए लखनऊ का वाश चित्रण बंगाल से अलग पहचाना जा सकता है।

शोध के उद्देश्य

बंगाल के सुप्रसिद्ध चित्रकार असित कुमार हाल्दार एवं क्षितीन्द्रनाथ मजूमदार के चित्रों का तुलनात्मक अध्ययन विषय का मुख्य उद्देश्य देखा जाए तो भारतीय कला में बंगाल स्कूल ने एक महत्वपूर्ण योगदान दिया जो समकालीन कला में इसके महत्व की ओर इंगित करती हैं जो हमारी प्राचीन तकनीक विलुप्त होती जा रही है, आने वाला शोधार्थी इस ज्ञान के भण्डार से लाभन्वित होगा ये सुप्रसद्धि चित्रकार जिन्होंने उत्तर प्रदेश की कला में एक महत्वपूर्ण वातावरण देने और आज भी इस वातावरण को बनाये रखने की आवश्यकता है, समय के अनुसार तकनीकों से अन्तर आ गया आवश्यकता है। हमारे बंगाल स्कूल निकली हुई तकनीक और इससे जुड़कर कुछ नया करने का प्रयास करूंगा, जिससे आने वाले विद्यार्थी इससे ज्ञान अर्जित कर हमारे बंगाल स्कूल के ये दो कलाकार के कृतित्व से प्रभावित होकर आज के विद्यार्थी इसमें कुछ ना कुछ नया करने का प्रयास करेगें।

इस विषय पर विभिन्न तकनीकों के आधार पर यह पता चलता है कि ये सुप्रसिद्ध चित्रकारों शोधकार्य नहीं हुआ। मैं अपने शोध में बंगाल स्कूल की प्रचलित शैली उत्तर प्रदेश में अपनी कलात्मक वातावरण को बनाते हुए इस कला का विकास किया उसके शोध की आवश्यकता है जो मेरे शोध का प्रमुख उद्देश्य है।

1. भारत में पुनर्जागरण चित्रशैली का उद्भव एवं विकास।
2. बंगाल की वाश चित्रशैली की विकास एवं लोकप्रियता।
3. असित कुमार हाल्दार एवं क्षितीन्द्रनाथ मजूमदार के कृतित्व एवं व्यक्तित्व।
4. असित कुमार हाल्दार एवं क्षितीन्द्रनाथ मजूमदार के कलाकृतियों का समीक्षात्मक एवं तुलनात्मक अध्ययन।

परिकल्पना

संबंधित शीर्षक के माध्यम से बिना शोधकर्ता का कार्य उचित दिशा में एक कदम भी नहीं बढ़ाया जा सकता है। जब तक शोधकर्ता को उस विषय के बारे में ज्ञान न हो कि उस विषय में कितना पहले कार्य हो चुका है व किस–किस क्षेत्र को लेकर कार्य किया है तथा उस कार्य में किस विधि का प्रयोग किया गया है तथा पूर्व कार्यो के निष्कर्ष क्या है, तब तक शोधकर्ता यह समझ ही नहीं सकता कि उपर्युक्त शीर्षक की रूपरेखा तैयार करके कार्य के सम्पन्न कर सकें तथा अपने शीर्षक के महत्व को समझ कर शोधकर्ता यह कह सकता है कि उपर्युक्त शीर्षक में विविध कार्य करने की आवश्यकता है। जिससे आगे आने वाले छात्र–छात्राओं व जिज्ञासुओं के लिए उपयुक्त कार्य लाभान्वित करेगा तथा शोधकर्ता के लिए अपने क्षेत्र से सम्बन्धित सम्पूर्ण सूचनाओं एवं खोजों से परिचित होना आवश्यक है।

अतः शोधकर्ता ने अपने शोध प्रबन्ध में समस्या से सम्बन्धित सूचनायें निम्न स्रोतों से प्राप्त की है जिनमें शोधकर्ता ने पत्र–पत्रिकायें, पुस्तक, जनरल, राष्ट्रीय, अन्तर्राष्ट्रीय, लेख, प्रकाशन, लघु शोध, शोध प्रबन्ध, व इन्टरनेट आदि से अपने कार्य को पूर्ण करने का प्रयाय किया है।

कार्य प्रणाली

प्रस्तुत शोध का विषय के लिए सर्वप्रथम इंटरनेट का उपयोग करूँगा प्रस्तुत शोध प्रबन्ध की कार्यप्रणाली में शोधार्थी विभिन्न संग्रहालयों एवं चित्र–वीथिकाओं में भ्रमण एवं छाया चित्रों का संग्रह एवं विषय के गहन अध्ययन के लिए पुस्तकों और जर्नल लेखों विश्लेषण करूंगा मेरे शोध की प्रकृति मूलत प्रयोगात्मक एवं सैद्धान्तिक है साथ ही साथ शोध शिक्षकों विषय विषेदन्तों के साथ कार्य करूँगा एवं कला समीक्षकों, आलोचकों, कला मर्मज्ञों के साथ साक्षात्मकार करूंगा जिससे हमारे शोध में मार्गदर्शन कर सकें। विभिन्न आयामों को आंकड़ा का विश्लेषण करने के लिए महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान करेंगे।

पुस्तकालयों और कला दीर्घाओं का भ्रमण करके प्राथमिक और द्वितीयक डेटा इकठा करने में सक्षम हो पाऊँगा में अपने शोध पत्रों और शोध प्रबन्ध लिखने के ए0पी0ए0 (A.P.A.) का पालन करूंगा।

अपने प्रस्तावित अनुसंधान को सफलता पूर्वक पूरा करने के लिए अधिकतम समर्थन प्राप्त करने के लिए हमारे सम्मानित शिक्षक और विश्वविद्यालय के नियमों का पालन करूंगा इस तरह से कार्य करूंगा कि ''**बंगाल के सुप्रसिद्ध चित्रकार असित कुमार हाल्दार एवं क्षितीन्द्रनाथ मजूमदार के चित्रों का तुलनात्मक अध्ययन**'' के ऊपर मेरा शोध कला पेशेवरों, शोधकर्ताओं और छात्रों के लिए कला और कलात्मक महत्व और उनके कृतित्व को समझने के लिए यह उपयोगी प्रेरणा दायक एवं अति महत्वपूर्ण होगा।

प्रस्तावित कार्य का प्रभाव एवं महत्व

इस शोध विषय के माध्यम से ''**बंगाल के सुप्रसिद्ध चित्रकार असित कुमार हाल्दार एवं क्षितीन्द्रनाथ मजूमदार के चित्रों का तुलनात्मक अध्ययन**'' विशेष रूप से बंगाल पुनर्जागरण चित्रशैली राजनैतिक एवं सामाजिक वातावरण उ0प्र0 पुनर्जागरण चित्रशैली के विकास और इन दोनों चित्रकारों की कलाकृतियों के विशेषताएं और चित्र संयोजन को समझने में चित्र तकनीकों के चित्र समझने में उपयोगी होगा और मेरा शोध पूर्ण होने के उपरान्त इस विषय से सम्बन्धित शोध कार्य करने वाले अन्य शोधार्थियों के लिए लाभान्वित होगा ।

शोधार्थी

(मुकेश कुमार पासवान)
धर्म समाज महाविद्यालय
अलीगढ़।

शोध निर्देशक

(डॉ0 ईश्वर चन्द गुप्ता)
एसोसिएट प्रोफेसर
चित्रकला विभाग
धर्म समाज महाविद्यालय, अलीगढ़।

बंगाल के सुप्रसिद्ध चित्रकार असित कुमार हाल्दार एवं क्षितीन्द्रनाथ मजूमदार के चित्रों का तुलनात्मक अध्ययन

विषयानुक्रमणिका

भूमिका

(i) आधुनिक चित्रकला की संक्षिप्त रूपरेखा

(ii) भारतीय चित्रकला पर यूरोपियन प्रभाव

(iii) नवीन कला की आवश्यकता

अध्याय–प्रथम भारतवर्ष में बंगाल पुनर्जागरण चित्रशैली का उद्‌भव एवं विकास

1.1 बंगाल पुनर्जागरण चित्रशैली परिभाषा एवं क्षेत्र

1.2 राजनैतिक एवं सामाजिक वातावरण

1.3 बंगाल में पुनर्जागरण चित्रशैली की स्थापना

अध्याय–द्वितीय उत्तर प्रदेश में पुनर्जागरण चित्रशैली का विकास

2.1 बंगाल स्कूल से प्रशिक्षित कलाकारों का आगमन

2.2 बंगाल की वाश शैली की लोकप्रियता

2.3 वाश चित्रशैली की प्रविधि एवं विधान

अध्याय–तृतीय कला गुरु असित कुमार हाल्दार जी का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

3.1 असित कुमार हाल्दार जी का परिचय

3.2 असित कुमार हाल्दार जी की कलाकृतियों, विषय–वस्तु और चित्र संयोजन

3.3 असित कुमार हाल्दार जी की कलाकृतियों की विशेषताएँ

अध्याय–चतुर्थ संत चित्रकार क्षितीन्द्रनाथ मजूमदार जी का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

4.1 क्षितीन्द्रनाथ मजूमदार जी का परिचय

4.2 क्षितीन्द्रनाथ मजूमदार जी की कलाकृतियों, विषय–वस्तु और चित्र संयोजन

4.3 क्षितीन्द्रनाथ मजूमदार जी की कलाकृतियों की विशेषताएँ

अध्याय–पंचम उत्तर प्रदेश में बंगाल चित्रशैली के शिष्य परम्परा के कलाकार

5.1 असित कुमार हाल्दार के शिष्य परम्परा के मुख्य कलाकार

5.2 क्षितीन्द्रनाथ मजूमदार के शिष्य परम्परा के प्रमुख कलाकार

5.3 बंगाल चित्र शैली से प्रभावित अन्य विशिष्ट कलाकार

अध्याय–षष्ठम असित कुमार हाल्दार एवं क्षितीन्द्रनाथ मजूमदार की कलाकृतियों का समीक्षात्मक एवं तुलनात्मक अध्ययन

6.1 रेखा विन्यास

6.2 रंग संयोजन

6.3 चित्र संयोजन

उपसंहार

चित्रसूची

संदर्भ ग्रन्थ सूची

संदर्भ

[1] शाह, रणजीत (2002), कला दीर्घा, समकालीन कला, ललित कला अकादमी, रविन्द्र भवन, 35 फिरोजशाह मार्ग, नई दिल्ली, अंक–22, पृ0 43, जून–सितम्बर **2002**

[2] अग्रवाल, श्याम बिहारी, राज्य ललित कला अकादमी, लखनऊ, प्रकाशन अनुराधा गोयल सचिव, राज्य ललित कला अकादमी, उ0प्र0 लाल बरादरी, ललित कला अकादमी मार्ग, लखनऊ, पृ0 3

[3] प्रदीप, किरण, कला दर्शन एवं आधुनिक भारतीय चित्रकला, आकृति–3, प्रकाश मीडिया (प्रा0) लि0, कृष्णा हाउस, शिवाजी रोड, प्रथम संस्करण, मेरठ, पृ0 48–49, **2003**

[4] प्रताप, रीता, भारतीय चित्रकला एवं मूर्तिकला का इतिहास, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 26वां संस्करण, पृ0 329–330, **2017,** आई0एस0बी0एन0 9789351312574

[5] भारद्वाज, विनोद, वृहद आधुनिक कला कोश, वाणी प्रकाशन, 21–ए, दरियागंज, नई दिल्ली, पृ0 272, **2009**

[6] अग्रवाल, गिर्राज किशोर, आधुनिक भारतीय चित्रकला, प्रकाशन गढ़ैया हकीमान, हास्पीटल रोड, आगरा, पंचम संस्करण, पृ0 330, **2006**

[7] प्रताप, रीता, भारतीय चित्रकला एवं मूर्तिकला का इतिहास, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 26वां संस्करण, पृ0 330, **2017,** आई0एस0बी0एन0 9789351312574

[8] वही, पृ0सं0 331, **2017**

[9] अग्रवाल, गिर्राज किशोर, आधुनिक भारतीय चित्रकला, प्रकाशन गढ़ैया हकीमान, हास्पीटल रोड, आगरा, पंचम संस्करण, पृ0 46, **2006**

[10] प्रदीप, किरण, कला दर्शन एवं आधुनिक भारतीय चित्रकला, आकृति–3, प्रकाश मीडिया (प्रा0) लि0, कृष्णा हाउस, शिवाजी रोड, प्रथम संस्करण, मेरठ, पृ0 54–55, **2003**

[11] अग्रवाल, श्याम बिहारी, राज्य ललित कला अकादमी, लखनऊ, प्रकाशन अनुराधा गोयल सचिव, राज्य ललित कला अकादमी, उ0प्र0 लाल बरादरी, ललित कला अकादमी मार्ग, लखनऊ, पृ0 9–10

[12] अग्रवाल, गिर्राज किशोर, आधुनिक भारतीय चित्रकला, प्रकाशन गढ़ैया हकीमान, हास्पीटल रोड, आगरा, पंचम संस्करण, पृ0 42–43, **2006**

[13] वही, पृ0 43, **2006**

[14] https://www.com/wiki/kshitindranath.mazumdar

[15] प्रताप, रीता, भारतीय चित्रकला एवं मूर्तिकला का इतिहास, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 26वां संस्करण, पृ0 335, **2017,** आई0एस0बी0एन0 9789351312574

[16] अग्रवाल, गिर्राज किशोर, आधुनिक भारतीय चित्रकला, प्रकाशन गढ़ैया हकीमान, हास्पीटल रोड, आगरा, पंचम संस्करण, पृ0 43, **2006**

संदर्भ ग्रन्थ सूची

[1] अप्पास्वामी, जया, क्षितीन्द्रनाथ मजूमदार, भारत कला भवन, वाराणसी, छवि भाग–2, **1976**

[2] अग्रवाल, गिर्राज किशोर, आधुनिक भारतीय चित्रकला, राज पब्लिकेशन, आगर, **2006**

[3] अग्रवाल, गिर्राज किशोर, कला और कलम, अलीगढ़, **2014**

[4] भारद्वाज, विनोद, वृहद आधुनिक कला कोष, नई दिल्ली, **2006**

[5] चतुर्वेदी, ममता, समकालीन भारतीय कला, हिन्दी ग्रन्थ एकेडमी, जयपुर, **2010**

[6] दास, रामकृष्ण, भारत की चित्रकला, ना0प्र0सभा, वाराणसी, **1939**

[7] डे, शैलेन्द्रनाथ, भारतीय चित्रकला की पद्धति, इण्डिया प्रैस, इलाहाबाद, **1946**

[8] गैरोला, वाचस्पति, भारतीय चित्रकला, मित्र प्रकाशन, इलाहाबाद, **1963**

[9] गोस्वामी, प्रेमचन्द्र, आधुनिक भारतीय चित्रकला के आधार स्तम्भ, रा0हि0ग्र0अ0, जयपुर, पृ0 46, **1995**

[10] गुर्टू, शचीरानी, कला दर्शन, साहनी प्रकाशन, दिल्ली, **1953**

[11] गांगुली, ओ0सी0, इण्डियन आर्ट एण्ड हेरीटेज, ऑक्सफोर्ड बुक एण्ड स्टेशनरी कम्पनी, कलकत्ता, **1957**

[12] हाल्दार, असित कुमार, भारतीय चित्रकला, इलाहाबाद, **1959**

[13] हाल्दार, असित कुमार, ललित कला की धारा, इलाहाबाद, **1960**

[14] हाल्दार, असित कुमार, दी रूवाईयात ऑफ उमर खैय्यम, वाराणसी, **1962**

[15] हाल्दार, असित कुमार, रूपदर्शिका, चन्द्रलोक प्रकाशन, इलाहाबाद, **1956**

[16] हैवेल, ई0बी0, इण्डियन स्कल्पचर एण्ड पेंटिंग, लन्दन, **1928**

[17] क्रेमरिश, स्टैला, असित कुमार हाल्दार, **1961**

[18] मुखर्जी, राधाकमल, भारतीय कला का विकास, सरस्वती प्रेस, इलाहाबाद, **1964**

[19] प्रताप, रीता, भारतीय चित्रकला एवं मूर्तिकला का इतिहास, राजस्थानी हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, **2017**

[20] राव, राजेश्वर, आउट लाइन ऑफ इण्डिया, कलकत्ता, **1956**

[21] शुक्ल, रामचन्द, कला तथा आधुनिक प्रवृत्तियाँ, सूचना विभाग, लखनऊ, **1958**

[22] शुक्ल, रामचन्द्र, कला, समय और समाज, ललित कला अकादमी, नई दिल्ली, **1980**

शोध पत्र – पत्रिकाएँ

[1] कला दीर्घा

[2] पत्रिका, राज्य ललित कला अकादमी, उ0प्र0 लखनऊ त्रैमासिक पत्रिका,

[3] तूलिका, त्रैमासिक, कला पत्रिका कानपुर

[4] कला सरोवर, त्रैमासिक, वाराणसी

[5] त्रिये, कला पत्रिका आगरा

[6] आकृति, ललित कला अकादमी, जयपुर

[7] आजकल

[8] इण्डिया टुडे

[9] समकालीन कला

[10] कला और कलाकार

[11] कला संगम त्रैमासिक नई दिल्ली

[12] कलावती

[13] कला संवाद– राज्य ललित कला अकादमी, लखनऊ

[14] कला–वार्ता

[15] कला चिंतन– ललितकता अकादमी उ0प्र0 लखनऊ

[16] कादंबिनी

[17] मार्ग

[18] ललित कला

[19] ललित कला समकालीन

[20] समकालीन भारतीय कला श्रृंखला

[21] समकालीन कला– ललित कला आकादमी, नई दिल्ली।

[22] राग रंग वार्षिक पत्रिक) आगरा

[23] रूपरेखा

संग्रहालय और पुस्तकालय

[1] कोलकात्ता म्यूजियम, कोलकात्ता

[2] रामास्वामी संग्रहालय, चेन्नई

[3] भारत भवन, भोपाल

[4] आशुतोष संग्रहालय, कोलकात्ता

[5] इलाहाबाद संग्रहालय

[6] राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली

[7] नैशनल अरकाइब, नई दिल्ली

[8] पुरातन विभाग, भारत सरकार, नई दिल्ली

[9] भारत कला भवन, वाराणसी

[10] प्रिन्स ऑफ वेल्स संग्रहालय, मुबंई

[11] राजकीय संग्रहालय, रामबागत, जयपुर

[12] कला भवन, कोलकाता

[13] मोर्डन आर्ट गैलरी, नई दिल्ली

[14] साहित्य कला अकादमी नई दिल्ली

[15] केन्द्रीय पुस्तकायल डॉ0 भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय, आगरा

[16] लखनऊ विश्वविद्यालय, पुस्तकालय

[17] धर्म समाज महाविद्यालय पुस्तकालय, अलीगढ़

[18] आगरा कालेज आगरा पुस्तकालय

[19] बी0एच0यू0 पुस्तकालय वाराणसी

[20] केन्द्रीय पुस्तकालय विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

[21] लखनऊ विश्वविद्यालय पुस्तकालय

[22] मौलाना आजाद पुस्तकालय, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़

बेवसाइट्स

[1] https://www.facebook.com/evnts/87420859289305

[2] https://www.christies.com/lotfinder/lot/asit-kumar-baldar-1890-19

[3] https://www.facebook.com/events/87420859289305

[4] https://www.mutualart.com/Artist/Kshitindranath_Mazumdar/1F49BA6F2D5CF99

[5] https://www,mutualart.com/artist/kshitindranath-mazumdar

[6] visualart79.blogspot.in/2011/09/3loj_post.html

[7] https://www,mutualart.com/artist/kshitindranath-mazumdar

[8] http://lucknowobserver.com/about/the-lucknow

[9] http://cn.wikipedia.org./wiki/ast.kumar-haldar

[10] http://www.arcudja.com/auctions/em/kshitindranath-majumdar/artist/349133/

[11] http://www.arcudja.com/auctions/em/kshitindranath-majumdar/artist/349133/

[12] http://www.saffronart.com/auctions/postwork.aspx?=144

1.	Title of the Synopsis	:	बंगाल के सुप्रसिद्ध चित्रकार असित कुमार हाल्दार एवं क्षितीन्द्रनाथ मजूमदार के चित्रों का तुलनात्मक अध्ययन
2.	Name of Scholar	:	Mukesh Kumar Pasawan
3.	Subject /Faculty	:	Drawing & Painting/ Faculty of Fine Arts
4.	Registration No.	:	353/2017 5741
5.	Name of Supervisor	:	Dr. Ishawar Chand Gupta
6.	Designation	:	Associate Professor Dept. of Drawing & Painting D.S. College, Aligarh
7.	Research Centre Name	:	D.S. College, Aligarh
8.	Total No. of Pages	:	32
9.	Scanned Photograph, E-mail Address, Phone, Contact, Address	:	Attached on next page.

BIO-DATA

Name : **Mukesh Kumar Pasawan**

Father's Name : Mr. Bamdev

Date of Birth : 05.07.1985

Address : Vill. Singhpur, Post Gyanpur, P.S. Gyanpur, Distt. Bhadohi (U.P.)

Pincode : 221304

Contact No. : 9760176051

Email ID : paswan.mukesh11@gmail.com

Educational Qualification :

S.No.	Name of Exam	Board / University	Year	Division / Grade	Subject
1.	High School	U.P. Board	2003	2nd	Hindi, Elementary Maths, Sanskrit, Science, Social Science, Drawing
2.	Intermediate	U.P. Board	2005	1st	Gen. Hindi, Sociology, VOC G Fond Sub, VOC C Photography
3.	B.A.	V.B.S.P.U. Jaunpur	2009	2nd	Drawing, Ancient History
4.	M.A.	Mahatma Gandhi Kashi Viyapeeth, Varanasi	2011	1st	Drawing & Painting
5.	B.Ed.	Mahatma Gandhi Kashi Viyapeeth, Varanasi	2015	1st	Hindi & History

Specialization : Drawing and Painting

Certified that particulars given above are true to the best of my knowledge and belief.

Date :
Place : **(Mukesh Kumar Pasawan)**